संस्कृतशोधसुधा

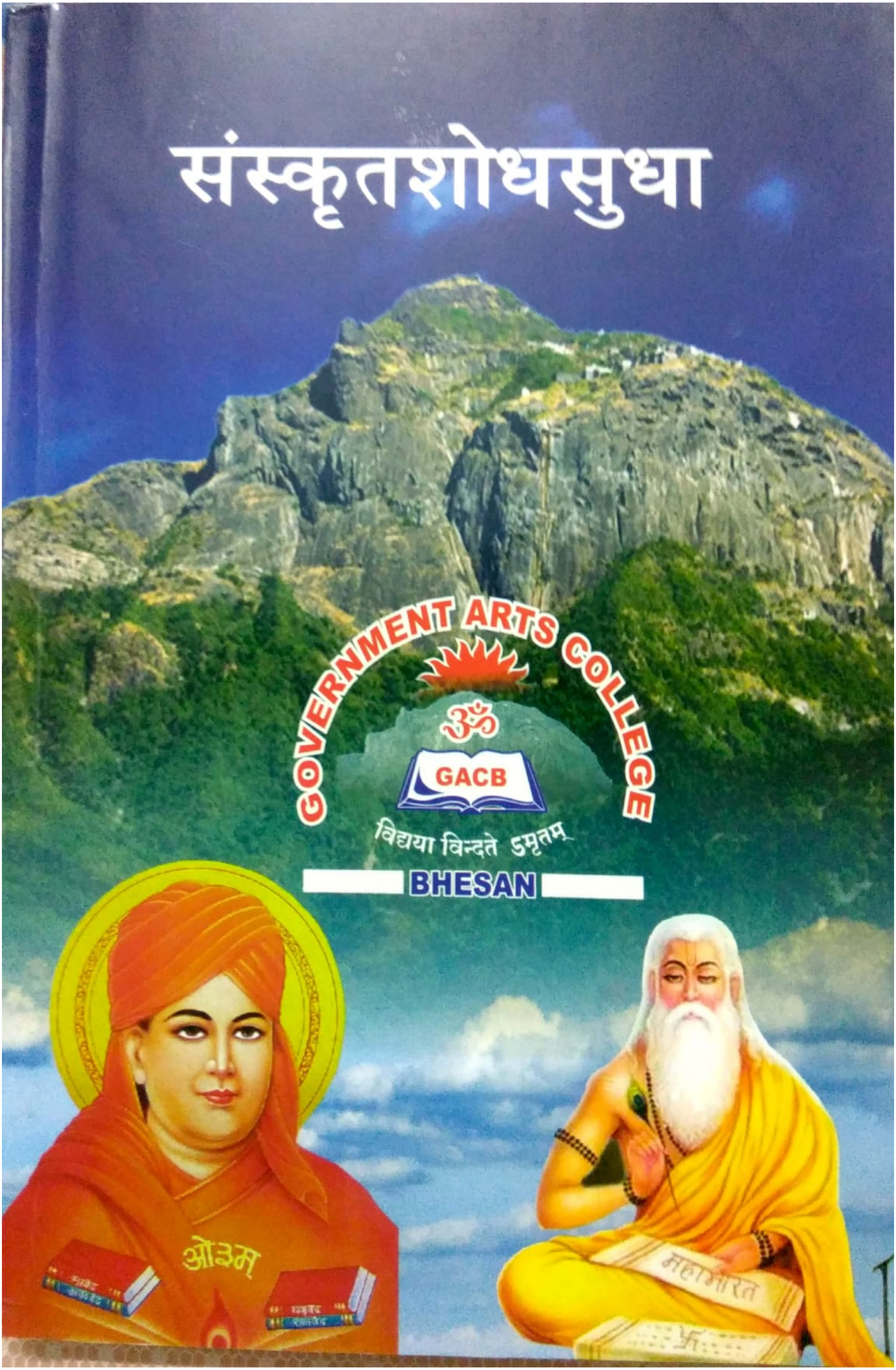

Scanned by CamScanner

संस्कृतशोधसुधा

संपादक

डो. विशाल आर. जोषी

डो. भावप्रकाश एम. गांधी

प्रकाशक

सरकारी विनयन कोलेज- भेसाण

ता. भेसाण, जि. जूनागढ – ३६२०२०, गुजरात

Scanned by CamScanner

वर्तमान समस्याओं के समाधान में संस्कृत की भूमिका

डॉ. नौनिहाल गौतम
सहायक-प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.) 470003

ISBN 978-93-5235-767-3

वर्तमान में हम वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में हमें तात्कालिक समस्याओं के समाधान के साथ-साथ सही दिशा में अग्रसर होने के लिए कुशल मार्गदर्शन की आवश्यकता है। सही मार्गदर्शन हेतु अनुभवजन्य ज्ञान की आवश्यकता होती है । युगों से सञ्चित अनुभवजन्य ज्ञान हमें संस्कृत में मिलता है। वेदों को तो सभी ज्ञानों का स्रोत माना गया है- **"सर्वज्ञानमयो हि सः"** (मनुस्मृति2/7)

वेदों के ज्ञान को आख्यानों के माध्यम से प्रचारित करने वाले पुराण तथा उसी ज्ञान को कान्तासम्मित उपदेश के रूप में प्रस्तुत करने वाले काव्य संस्कृत में विद्यमान अगाध ज्ञान के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यह ज्ञान सनातन है। इसका उपयोग समस्याओं के समाधान तथा सुरक्षित भविष्य के निर्माण हेतु किया जा सकता है।

समस्या- सृष्टि की रचना सत्त्व, रजस् और तमस् से मिलकर हुई है। इनके न्यूनाधिक्य के आधार पर ही तत् तत् प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। तमस् के कारण समस्याएँ (प्रायः) उत्पन्न होती हैं। वस्तुतः विकास के मार्ग में आने वाली बाधाएँ ही समस्याएँ हैं। समस्याएँ प्राचीन काल से ही विद्यमान रही हैं, जैसे- दानव-राक्षस समस्या आदि। संसार के ग्राम्य धर्म में प्रवृत्त हो जाने पर उसको सही मार्ग पर लाने के लिए ही तो नाट्य की रचना हुई थी। तद्यथा-

ग्राम्यधर्मप्रवृत्ते तु कामलोभवशङ्गते। ईर्ष्याक्रोधादिसम्मूढे लोके सुखितदुःखिते॥
न वेदव्यवहारोऽयं संश्राव्यः शूद्रजातिषु। तस्मात्सृजापरं वेदं पञ्चमं सार्ववर्णिकम्॥

(नाट्यशास्त्र 1/9, 12)

वर्तमान में अनेक समस्याएँ अनेक रूपों में व्यक्ति, राष्ट्र और विश्व के विकास को अवरुद्ध कर रही हैं, जैसे- भ्रूण हत्या, अशिक्षा, महिला-उत्पीडन, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, पर्यावरण प्रदूषण, जातिप्रथा, प्रान्तवाद, आत्महत्या, तनाव (हताशा), बेरोजगारी, जनसंख्या, तलाक, अपराध, भाषाविरोध, और संस्कृतिह्रास इत्यादि।

Scanned by CamScanner